B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – School Management & Leadership
Unit – 2 (c)
Topic – Headmaster(प्रधानाध्यापक)
Lecture No: 29

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College,
Shahpur Patory
(Samastipur)

Continued from the previous lecture.....

छात्र-क्रियाकलाप में प्रधानाध्यापक की भूमिका

5. **छात्रो में परस्पर सहयोग एवं प्रेम की भावना का विकास** – प्रधानाध्यापक के द्वारा छात्रों में प्रेम , सहयोग, मित्रता, सहानुभूति आदि भावनावों का विकास करना चाहिए जिससे उनमें किसी कार्य को मिल -जुलकर एवं पारस्परिक सहयोग से पूरा करने की प्रवृत्ति विकसित हो।

6. **खेल, टूर्नामेंट, उत्सव एवं अन्य प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन करना** - प्राचार्य के द्वारा स्कूल में छात्रों के सामाजिक विकास हेतु खेल , प्रतियोगितायें, टूर्नामेंट, उत्सव, नाटक, गोष्ठियां, मेले, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की व्यवस्था की जानी चाहिए। साथ ही सभी छात्रों की इनमें भाग लेने की प्रेरणा दी जानी चाहिए।

7. **छात्रों में आत्म-विश्वास एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना** - प्राधानाध्यापक के द्वारा छात्रों को विभिन्न कार्य -क्षेत्रों में प्रतिनिधित्व प्रदान किया जाना चाहिए। इसके लिये छात्रों को प्रशासनिक कार्यों , संगठन, निरीक्षण आदि कार्यों में भाग लेने के अवसर प्रदान करना चाहिए।

8. **छात्रों को स्वास्थ्य संबंधी सेवायें प्रदान करना** - प्राचार्य के द्वारा छात्रों के स्वास्थ्य संबंधी विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों, जैसे -शारीरिक जाँच, दवाई की व्यवस्था, व्यायाम, नृत्य, तैरना, मध्याह्न भोजन की व्यवस्था आदि , का आयोजन करना चाहिए।

9. **छात्रों में स्वस्थ परंपराओं का विकास करना** - छात्रों में सामूहिक जीवन के विकास हेतु प्रधानाध्यापक को स्वस्थ परम्पराएँ डालनी चाहिए। जैसी परम्पराएँ विद्यालय में होंगी उसी प्रकार का सामूहिक जीवन छात्रों में विकसित होगा।

10. **छात्र-संघ की भावना का विकास** – प्राचार्य द्वारा छात्रों में संघ की भावना का विकास करना भी परम आवश्यक है। इस दृष्टि से छात्र -संघ की स्थापना करनी चाहिए। छात्र -संघ द्वारा छात्रों में एकता , नेतृत्व, परस्पर सहयोग, प्रेम आदि गुणों का विकास होता है।

प्रधानाध्यापक के दायित्व एवं कर्तव्य

स्कूल का वातावरण किसी सुसंगठित परिवार की तरह होता है। जिस प्रकार किसी परिवार का मुखिया दायित्वों एवं कर्तव्यों से बंधा होता है , ठीक उसी प्रकार प्रधानाध्यापक का भी अपने छात्रों, शिक्षकों, अन्य कर्मचारियों के प्रति भी कुछ दायित्व एवं कर्तव्य होते है।

दायित्व – प्राचार्य के प्रमुख दायित्व निम्नांकित है -

1. शिक्षकों एवं छात्रों की सुख-सुविधाओं का खयाल करना।
2. उन्हें अनुशासित रखना, एवं पढ़ने-लिखने की ओर प्रवृत्त करना।
3. विद्यालय के सभी सदस्यों के बीच प्रेम व सद्भावना बढ़ाना।
4. सहायक शिक्षकों की कठिनाइयों को हल करना , उनके कार्यों की निगरानी करना एवं उनके अध्यापन कार्य में उचित दिशा-निर्देश देना।

To be continued.....